राह में पत्थर

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

महारानी अमानीटोर रास्ते पर चली जा रही थीं, उनका सिर गर्व और आत्मविश्वास से ऊँचा उठा था और उनकी पोशाक हवा से उनके पीछे लहरा रही थी। थोड़ी दूरी पर उनके लोगों यानी नूबियों के लम्बे और संकरे पिरामिड थे और उन पिरामिड के पार थी, नील नदी। रेगिस्तान में जीवन का वादा लिए यह नदी रेत और स्वर्ण के इस राज्य से होकर बहती थी।

टहलते-टहलते महारानी अपने राज्य के कई लोगों के पास से होती हुई गुज़रीं जैसे कि व्यापारी और शिल्पकार, किसान व अन्य खेतिहर। उन्होंने हाथ हिलाकर या एक मन्द मुस्कान के साथ उनका अभिवादन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। अमानीटोर पैनी परख रखने वाली और बड़ी करुणाशील शासक थीं; इस तरह टहलते समय वह सुनतीं व देखतीं, ध्यान देतीं कि उनकी प्रजा क्या कर रही है और वह सर्वोत्तम तरीक़े से अपनी प्रजा की किस तरह मदद कर सकती हैं।

कुछ ही देर में, महारानी चहल-पहल भरे एक बाज़ार में आ पहुँचीं। इस बाज़ार के प्रवेश द्वार पर दो व्यापारी खड़े थे जिन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि वे आपस में बहस कर रहे हैं।

"वह *मेरा* ग्राहक था जिसे तुमने चुरा लिया!" उनमें से एक व्यापारी ने कहा, उसकी आवाज़ गुस्से से भरी थी। "वह महिला *मेरे* आभूषण खरीदना चाहती थी!"

"अच्छा!" दूसरे व्यापारी ने कहा। "ऐसा कैसे हो सकता है कि वह *तुम्हारे* आभूषण खरीदना चाहती थी जबकि उसने खरीदे तो *मेरे* आभूषण?"

उनकी बहस बढ़ती चली गई और जल्द-ही वे एक-दूसरे की ओर उंगली दिखाकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। महारानी कुछ देर तक उनकी ओर देखती रहीं और फिर वह आगे बढ़ गईं।

आगे जाकर उन्होंने दो किसानों को देखा। वे भी आपस में बहस कर रहे थे।

उनमें से एक किसान कह रहा था, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई *मेरे* ठेले के पास *अपना* अनाज बेचने की?"

"यह तुम क्या कह रहे हो? मैं यहाँ पहले आया था। *तुम्हें* यहाँ से हटना चाहिए।" दूसरे किसान ने चिल्लाकर कहा।

उन्हें झगड़ा करते हुए सुनकर, महारानी ने सोचा, “यहाँ पर कुछ तो है जो सही नहीं है।”

अगले दिन महल में उन्होंने अपने सेवकों को बुलवाया।

महारानी ने उनसे कहा, “मैं चाहती हूँ कि तुम राज्य का सबसे बड़ा पत्थर ढूँढ़ो और मैं कल जिस रास्ते पर गई थी उसके सबसे चहल-पहल वाले इलाके में उसे रख दो।

सेवकों ने अपना सिर हिलाया और कार्य पूरा करने के लिए तुरन्त-ही निकल पड़े। शाम ढलने तक वे लौट आए।

“महारानी,” उन्होंने कहा, “हमने कर दिया। हमने रास्ते के बीचों-बीच एक बड़ा-सा पत्थर रख दिया है।”

“बहुत बढ़िया। कल सुबह, तुम मुझे उस तक लेकर जाओगे,” महारानी ने कहा।

तो अगली सुबह, वे महारानी को सड़क के उस हिस्से पर ले आए जो बाज़ार से ठीक पहले था। जिस किसी को भी बाज़ार में अपना सामान बेचना या खरीदना होता, उसे इसी जगह से होकर गुज़रना पड़ता। बस अब अन्तर यह था कि एक बड़ा-सा पत्थर उनका रास्ता रोक रहा था — गुलाबी-भूरे रंग के पत्थर का एक विशाल टीला।

“बहुत बढ़िया,” महारानी अमानीटोर ने पत्थर को देखकर कहा। “चलो, हम लोगों की दृष्टि से कहीं दूर खड़े हो जाते हैं — वहाँ, उन पेड़ों के पीछे — और देखते हैं कि क्या होता है।”

जैसे ही वे पेड़ों के पीछे जाकर खड़े हुए उन्हें सड़क की ओर से आता हुआ शोर सुनाई दिया। यह एक आदमी का शोर था जो बैलगाड़ी चला रहा था और सीधा उस बड़े-से पत्थर की ओर बढ़ा आ रहा था।

“अरे — यह क्या! रुको! रुको!” उस आदमी ने बैलों की लगाम खींचते हुए कहा। बैल लड़खड़ाते हुए अचानक-से रुक गए और वह आदमी सीधा उनकी पीठ पर जा गिरा।

“क्याऽऽ?” बैलों को बाँधने वाली रस्सियों के जाल से नीचे फिसलते हुए उसने कहा। संकोच करते हुए उसने पत्थर की ओर कुछ क़दम बढ़ाए। “यह यहाँ पर कैसे आ गया?”

वह पत्थर के एक ओर गया और फिर दूसरी ओर, यह जानने के लिए कि वह पत्थर यहाँ पर अचानक कैसे आ गया था। आख़िरकार, उसने अपने कन्धे उचकाए, वापस अपनी बैलगाड़ी पर चढ़ा और बैलों को पत्थर के बगल से घुमाकर ले गया।

पेड़ों के पीछे से, महारानी ने बहुत हल्के-से अपना सिर हिलाया।

कुछ समय बीता। और फिर भारी व धीमे क़दमों की आवाज़ सुनाई दी। दो शिल्पकार सड़क से होकर गुज़र रहे थे और उन्होंने साथ मिलकर अपने औज़ारों से भरा एक बड़ा-सा बोरा उठाया हुआ था।

"नहींऽऽ!" पत्थर के पास पहुँचते हुए उनमें से एक ने कहा। वह बोरे के बोझ से हाँफ़ रहा था। "अरे, वह पत्थर हमारे रास्ते में है!"

"हाँ, पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा!" उसके साथी ने कहा। "हम इतना सारा बोझ उठाकर, इतनी दूर आ गए, और जैसे ही हमने सोचा कि हम बस बाज़ार पहुँच ही गए हैं, तभी *यह* हो गया!"

वे आदमी इसी तरह कुछ देर तक रोते-चिल्लाते रहे। अन्ततः उन्होंने एक गहरी साँस ली, अपने बोरे को कसकर पकड़ा और पत्थर के बगल से होकर निकल गए।

महारानी ने एक-बार फिर अपना सिर हिलाया।

कुछ ही देर में, लोगों का अगला समूह वहाँ आ पहुँचा। यह तीन कुलीन व्यक्तियों का समूह था, वे दरबारी जिन्हें महारानी भली-भाँति जानती थीं। वे विद्वान पुरुष थे जो नीतिशास्त्र व अन्य दर्शनशास्त्र की अपनी समझ के लिए पूरे राज्य में सम्माननीय थे।

वे गहन चर्चा में थे और किसी-न-किसी नैतिक समस्या पर तर्क-वितर्क कर रहे थे कि तभी उनमें से एक की नज़र सामने गई और उसे पत्थर दिखाई दिया। वह अचानक-ही रुक गया और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाकर दूसरों को रोका।

"देखो — वह देखो!" उसने कहा। "एक बड़ा-सा पत्थर। सड़क के बीचों-बीच। ऐसा किसने किया होगा?"

उसके साथियों ने भी आश्चर्य के साथ उस बड़े-से पत्थर को देखा।

आख़िरकार उनमें से एक ने कहा, "शायद पत्थर का काम करने वाले किसी कारीगर ने," उसकी भौहें चढ़ी हुई थीं और वह ध्यान से सोच रहा था। "वे हमेशा ऐसे ही अस्त-व्यस्त तरीक़े से अपना कार्य करते हैं।

"वे पत्थर के कारीगर!" तीसरे व्यक्ति ने हवा में अपनी उंगली हिलाते हुए कहा। अब जब वे पत्थर के कारीगरों के विषय में बात कर रहे थे, तो उनके बारे में उत्तेजित होना बहुत आसान था।

“मुझे पता था कि दूसरों की परवाह किए बिना अपने औज़ार इधर-उधर छोड़ने की उनकी आदत है,” उस व्यक्ति ने आगे कहा। “लेकिन यह? एक *पत्थर* को सड़क के बीच में छोड़ देना? और वो भी इतना बड़ा। कितनी बेढंगी! कितनी भद्दी! कितनी विवेकहीन! कितनी निन्दनीय बात है यह!”

उसके निन्दनीय शब्दों की सूची बढ़ती गई, वे और भी पेचीदा होते गए; उसके अन्य साथी सहमती में और ज़ोर-ज़ोर से अपना सिर हिलाते रहे। *हाँ, हाँ,* उन्होंने सोचा। *कितनी बेहूदा हरकत है यह। कितना गलत किया पत्थर के इन कारीगरों ने!*

पत्थर के कारीगरों को कोसते-कोसते, वे भी पत्थर के बगल से होकर निकल गए।

उधर पेड़ों के पीछे, महारानी का एक सेवक उनकी ओर मुड़ा। उसने कहा, “महारानी, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि हम यहाँ क्या देख रहे हैं? आपको क्या लगता है यहाँ क्या होगा?”

“बस इन्तज़ार करो। तुम्हें पता चल जाएगा,” महारानी ने शान्तभाव से कहा।

उन्होंने ऐसा कहा ही था कि तभी एक आदमी, एक विनम्र किसान, उस रास्ते से होकर गुज़रा। उसने अपने कन्धे पर एक छोटा-सा झोला लटकाया हुआ था।

पत्थर के नज़दीक पहुँच कर वह रुक गया।

उसने मन्द स्वर में कहा, “यह पत्थर बाज़ार की ओर जाने वाला रास्ता रोक रहा है। इसके बगल से जाने में लोगों को तकलीफ़ होगी।”

और फिर वह अपना झोला नीचे रखकर पत्थर की ओर बढ़ा। अपने पंजों को ज़मीन पर अच्छी तरह जमाकर, वह पत्थर को ढकेलने लगा।

अअऽऽऽ. . . वह पत्थर ज़रा-सा भी नहीं हिला।

अअऽऽऽ. . . अभी भी कुछ नहीं।

अअऽऽऽ. . . अब वह महसूस कर पा रहा था कि पत्थर हल्का-सा हिल रहा है, सड़क और पत्थर के बीच जगह बन रही है। नीचे देखने पर उसने पाया कि वह बहुत हल्का-सा सरका है।

अअऽऽऽ. . . यह बहुत मेहनत का काम था, लेकिन अब जब वह पत्थर हिल चुका था तो उसे थोड़ा-थोड़ा करके ढकेलना आसान होता जा रहा था।

वह ऐसा करता रहा; सड़क पर अन्य लोग भी इकट्ठा हो गए। उसे देखकर वे रुक रहे थे; न चाहते हुए भी उन्हें उस पर दया आ रही थी — यह छोटा-सा, दुबला-पतला आदमी अपनी पूरी ताक़त के साथ इस पत्थर को ढकेलने की कोशिश कर रहा है।

और फिर — वहाँ खड़े लोगों में से एक व्यक्ति आगे आया। उसने भी अपने पंजे ज़मीन पर जमाए। उसने भी पत्थर की खुरदुरी सतह पर अपने हाथ रखे और धक्का लगाना शुरू किया। उसके बाद एक और व्यक्ति आ गया, फिर एक और, फिर एक और, जब तक कि पत्थर के सामने लोगों की भीड़ इकट्ठा नहीं हो गई। उन सभी ने अपने हाथ पत्थर पर रखे और एक-साथ मिलकर उसको धक्का लगाया।

और ऐसा करते समय उनमें से हरेक व्यक्ति, अपने हृदय में कुछ खुलता हुआ महसूस कर पा रहा था। वे कुछ पिघलता हुआ महसूस कर पा रहे थे। किसान की उदारता से प्रेरित होकर, उन्होंने भी उस अच्छाई का अनुभव किया जो दूसरों की मदद करने से विकसित होती है। किसान की दृढ़ता से प्रेरित होकर, उसके इस दृढ़ निश्चय से प्रेरित होकर कि वह तब तक प्रयास करेगा जब तक कार्य पूर्ण नहीं हो जाता, उन लोगों ने भी अपने प्रयत्न बढ़ा दिए। वे बार-बार धक्का लगाते, शक्ति का आवेग उनके अन्दर से व उनके आस-पास से होकर गुज़रता, वह उनके अन्दर से उभरता। वह पत्थर, जो इतना बड़ा था कि पहले उसे हिलाना लगभग असम्भव लग रहा था, वह अब आराम से ज़मीन पर ख़िसक रहा था। जल्द-ही, वह पूरी तरह सड़क से हट गया।

जो लोग किसान के साथ आ गए थे वे अब उसे घेर कर खड़े थे। वे उसकी पीठ थपथपाने लगे और उन्होंने प्रेम से उसे गले लगाया। और फिर, सूर्य की जगमगाती किरणों से आच्छादित वे सभी एक साथ बाज़ार के अन्दर गए।

महारानी पेड़ों के पीछे से बाहर आईं। वे मुस्करा रही थीं।

उन्होंने अपने सेवकों से कहा, “कितना सुन्दर दिन है यह, है न? सैर के लिए उत्तम।”

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।